सव्वं सुचिण्णं सफलं नराणं,
कडाण कम्माण न मोक्ख अत्थि ।

विषय-सूची

पद्यमय शुभाशुभ कर्मफल

शुभाशुभ कर्मफल

प्रश्न १. चक्षु इन्द्रिय (आंख) की हीनता किस कर्म से होती है?

उत्तर स्त्री पुरुष के सुन्दर रूप को देख कर विषयानुराग करने से, कुरूप देख कर जुगुप्सा तथा उन की निन्दा करने से, अन्धों का उपहास करने तथा उन्हें चिढ़ाने से, मनुष्य पशु एवं जन्तुओं की आंखों को कष्ट देने और फोड़ने से, कुशास्त्र, बुरी पुस्तकें एवं गन्दे पत्रों को पढ़ने से, नाटक सिनेमा देखने से, आंखों के विषय में आसक्त होने से, क्रूर दृष्टि से देखने से नेत्रों द्वारा कुचेष्टा करने से अन्धा, काणा, चिप्पड़ा आदि नेत्रों का रोगी होता है।[1]

---

१. नेत्तावरणे, नेत्तविण्णाणावरणे —पन्नवणा सूत्र २३।१।१०॥

चक्खुदंसणावरणे, पासियव्वं ण पासति, पासिओकामे वि ण पासति, पासित्ता वि ण पासति, उच्छण्णदंसणिया वि भवति।

—पन्नवणा सूत्र २३।१।१०॥

अणिट्ठ-रूवा, अणिट्ठा लावण्णं —पन्नवणा सूत्र २३।१।१५॥

अमणुण्णा-रूवा; मणोदुहया, वइदुहया, कायदुहया।

—पन्नवणा सूत्र २३।१।११॥

पडिणीययाए, निण्हवणयाए, अंतराएण, पदोसेणं, अच्चासायणए, विसंवादजोगेणं। —भगवती सूत्र ८।९।३७,३८॥

परदुक्खणयाए, परपरितावणयाए। —भगवती सूत्र ७।६।१०॥

रोगी होता है।[1]

प्रश्न ४. श्रोत्रेन्द्रिय की प्रबलता किस कर्म से होती है?

उत्तर शास्त्र और सुकथा श्रवण करने से, जो जैसा है वैसा श्रवण न करने से, बधिरों पर दया करने से और यथाशक्ति उनकी सहायता करने से, दीन दुःखियों की प्रार्थना पर ध्यान देकर उन्हें सन्तोष दिलाने से, गुणी जनों के गुणों को सुन कर प्रसन्न होने से, निन्दा न सुनने से इत्यादि कर्मों से श्रोत्रेन्द्रिय (कान) की नीरोगता, सुन्दरता और तीव्र-श्रवणता प्राप्त होती है।[2]

---

१. सोतावरणे, सोयविण्णाणावरणे—पन्नवणा सूत्र २३।१।१०॥

अचक्खुदंसणावरणे—पन्नवणा सूत्र २३।१।११॥

अणिट्ठा सद्दा, अणिट्ठा सरा—पन्नवणा सूत्र २३।१।१५॥

अमणुण्णा सद्दा, मणोदुहया, वइदुहया, कायदुहया ।

—पन्नवणा सूत्र २३।१।१२॥

पडिणीययाए, निण्हवणयाए, अंतराएण, पदोसेणं, अच्चासायणएण, विसंवादजोगेणं—भगवती सूत्र ८।९।२७,२८॥

परदुक्खणयाए, परपरितावणयाए—भगवती सूत्र ७।६।१०॥

२. उपरोक्त से विपरीत—इट्ठा सद्दा, इट्ठासरा ।

—पन्नवणा सूत्र २३।१।१५॥

मणुण्णा सद्दा, मणोसुहया, वइसुहया, कायसुहया ।

—पन्नवणा सूत्र २३।१।१२॥

मैत्री भाव, सहायता प्रदान, विनय भक्ति, एकाग्रता एवं अनुकम्पाभाव से

—भगवती सूत्र ८।९।२७,२८॥

अदुक्खणयाए, अपरियावणयाए—अणुकंपयाए—भगवती सूत्र ७।६।९॥

प्रश्न ७. जिह्वेन्द्रिय की हीनता किस कर्म से होती है ?

उत्तर मदिरा मांस आदि अभक्ष्य के खाने से, षट् रस पदार्थों में अत्यन्त लोलुपता रखने से, रसना के पोषणार्थ महारम्भ करने से, अज्ञानता का उपदेश देकर हिंसा फैलाने से और कुत्सित उपदेश द्वारा पाखण्ड का प्रचार करने से, किसी का मर्म प्रकाशने से, झूठ बोलने से, गूंगों और तोतलों की हँसी करने से, साधु साध्वी आदि गुणी जनों की निन्दा करने से, अन्य की जिह्वा का छेदन-भेदन करने से जिह्वा की हीनता मिलती है, गूंगा तोतला बनता है, उसके वचन लोगों को अच्छे नहीं लगते और उस के मुख से दुर्गन्ध निकलती है।[1]

प्रश्न ८. जिह्वेन्द्रिय की नीरोगता किस कर्म से मिलती है ?

उत्तर अभक्ष्य के त्याग से, रसगृद्धित न होने से, सद्बोध करा कर धर्म फैलाने से, सदा गुणों का ही उच्चारण करने से, सब को सुख-दायक वचन बोलने से, जिह्वा-हीन की सहायता करने से जिह्वा का नीरोगी

---

१. रसावरणे, रसविण्णाणावरणे —पन्नवणा सूत्र २३।१।१०॥

अचक्खुदंसणावरणे —पन्नवणा सूत्र २३।१।११॥

अणिट्ठा रसा, अणिट्ठा लावण्णं —पन्नवणा सूत्र २३।१।१५॥

अमणुण्णा रसा, मणोदुहया, वइदुहया, कायदुहया।

—पन्नवणा सूत्र २३।१।१२॥

पडिणीययाए, निण्हवणयाए, अंतराएणं, अच्चासायणए, विसंवादजोगेणं।

—भगवती सूत्र ८।९।३७,३८॥

परदुक्खणयाए परपरितावणयाए —भगवती सूत्र ७।६।१०॥

कारक रचनाओं के रचने से, आज्ञा प्राप्त करके वस्तु ग्रहण करने से, हस्त-हीन की सहायता आदि करने से नीरोगी तथा वलिष्ठ हाथों वाला होता है।[1]

प्रश्न ११. पाँव की हीनता किस कर्म से होती है ?

उत्तर रास्ता छोड़ कर चलने से, हिंसा आदि पाप-कार्यों में आगे बढ़ने से धर्म-कार्य में पीछे हटने से, कीड़ी आदि जन्तुओं को पाँव तले रौंदने से, अन्य छोटे बड़े जीवों के पाँव तोड़ने से, लंगड़े पंगले का उपहास करने से, चोरी यारी आदि कुकार्यों में प्रवर्तने से पाँव-हीन पंगला होता है।[2]

---

१. इट्ठा फासा, इट्ठा लावण्णं —पन्नवणा सूत्र २३।१।१५॥

मणुण्णा फासा, मणोसुहया, वइसुहया, कायसुहया ।
—पन्नवणा सूत्र २३।१।१२॥

मैत्री भाव, सहायता-प्रदान, विनय-भक्ति, एकाग्रता तथा अनुकम्पा भाव लाने से —भगवती सूत्र ८।९।३७,३८॥

अदुक्खणयाए, अपरियावणयाए-अणुकंपयाए —भगवती सूत्र ७।६।९॥

२. बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए, पिट्टणयाए, परियावणयाए। —भगवती सूत्र ७।६।१०॥

परपीलाकारगं च हासं —प्रश्नव्याकरण सूत्र २।२।२५॥

वल-मदेणं —भगवती सूत्र ८।९।४३॥

काय-अणुज्जयाए —भगवती सूत्र ८।९।४२॥

अणिट्ठा लावण्णं, अणिट्ठे उट्ठाण-कम्म-बल-वीरिय-पुरिसक्कारपरक्कमे
—पन्नवणा सूत्र २३।१।१५॥

काय-दुहया —पन्नवणा सूत्र २३।१।१२॥

वल-विहीणया —पन्नवणा सूत्र २३।१।१६॥

की कमाई में विघ्न डालने से, किसी की धरोहर को दबा कर उसे निर्धन बना देने से, किसी का धन अग्नि में जला देने और जल में डुबा देने आदि कर्मों से व्यक्ति निर्धन बनता है।[1]

प्रश्न १४. धनवान किस कर्म से होता है?

उत्तर निर्धनों दरिद्रों पर दया करने से तथा उन की सहायता करने से, अन्य की द्रव्य-वृद्धि देख कर ईर्ष्या न करने अपितु प्रसन्न होने से, प्राप्त द्रव्य पर ममता कम करके दान पुण्य धर्मोन्नति के कार्य तथा अनाथों की सहायता आदि सुकृत्यों में अपना द्रव्य लगाने से जीव धनवान् होता है।[2]

---

१. हिंसे बाले मुसावाई, अद्धाणंमि विलोवए।
अन्नदत्तहरे तेणे, माई कं नु हरे सढे॥
— उत्तराध्ययन सूत्र ७।५॥

परिवूढे परंदमे —उत्तराध्ययन सूत्र ७।६॥

लाभंतराएणं —भगवती सूत्र ८।९।४४॥

लाभमदेणं —भगवती सूत्र ८।९।४३॥

लाभंतराए —पन्नवणा सूत्र २३।१।१७॥

लाभविहीणया —पन्नवणा सूत्र २३।१।१६॥

२. सया सच्चेण संपन्ने, मेत्तिं भूएहिं कप्पए।
—सूत्रगडांग सूत्र १५।३॥

अमच्छरियाए —ठाणांग सूत्र ४।४।३९॥

तुलिया विसेसमादाय, दयाधम्मस्स खंतिए।
विप्पसीएज्ज मेहावी, तहाभूएण अप्पणा॥
— उत्तराध्ययन सूत्र ५।३०॥

(आगे देखिये)

संताप देने से तथा ऋण और धरोहर को दबा लेने से कुपुत्र (अविनीत पुत्र) की प्राप्ति होती है।

प्रश्न १८. सुपुत्र किस कर्म से प्राप्त होता है?

उत्तर स्वयं माता-पिता की भक्ति करने से, अन्य को करने का बोध कराने से, पुत्रों को धर्म-मार्ग में लगाने से, सुपुत्र देख प्रसन्न होने से सुपुत्र की प्राप्ति होती है।

प्रश्न १९. कुभार्या किस कर्म से मिलती है?

उत्तर स्त्री-भर्तार का परस्पर क्लेश कराने से, उन का झगड़ा देख प्रसन्न होने से, स्त्री भरमाने से, उसे व्यभिचारिणी बनाने से, सतियों की निन्दा करने से उन्हें कलंक चढ़ाने से, किसी की अच्छी स्त्री देख दुःख मानने से कुभार्या मिलती है।

प्रश्न २०. सुभार्या किस कर्म से मिलती है?

उत्तर स्वयं शीलवान् रहने से, व्यभिचारिणी के प्रसंग के होने पर अपने व्रत में दोष न लगाने से, व्यभिचारिणी स्त्रियों को सुधारने से, सतियों की प्रशंसा करने से तथा उन की सहायता करने से और पति-पत्नी के क्लेश को शान्त कराने से सुभार्या प्राप्त होती है।

प्रश्न २१. अपमान (मान हानि) होना किस कर्म का फल है?

उत्तर अन्य का मान खण्डित करने से, माता पिता गुरु आदि वृद्धों की विनय नहीं करने से, निर्धन तथा निर्बुद्धि एवं दीन हीन गरीबों का निरादर करने से, शत्रुओं का अपमान सुनकर खुश होने से, अपनी प्रशंसा आप करने से, अपने गुणों का अहंकार करने

उत्तर कुटुम्बों में परस्पर सम्प मेल-मिलाप कराने से, द्रव्य-हीन कुटुम्बों की सहायता करने से, कुटुम्बों में सम्प देख कर प्रसन्नता लाने से—सुखदायी कुटुम्ब मिलता है।

प्रश्न २५. रोगी काया किस कर्म से मिलती है?

उत्तर रोगियों को सन्ताप देने से, उनकी निन्दा करने से, उनका उपहास उड़ाने से, औषध-दान में विघ्न डालने से, रोग उत्पन्न करने और दूसरों को दुःख देने के तरीकों को काम में लाने से, किसी तपस्वी एवं आदर्श त्यागी के मलिन वस्त्रों को देख कर घृणा करने से रोगी काया मिलती है।[१]

प्रश्न २६. नीरोगी काया का मिलना किस कर्म का फल है?

उत्तर दीन-दुःखियों को रोगावस्था में देख कर दयाभाव लाने से एवं उन्हें सुखी बनाने से, साधु साध्वी आदि महान् आत्माओं को औषध का दान देने एवं दिलाने से—नीरोगी काया मिलती है।[२]

---

१. बहूणं पाणाणं भूयाणं जीवाणं सत्ताणं दुक्खणयाए, परियावणयाए।
—भगवती सूत्र ७।६।१०॥

कायदुहया —पन्नवणा सूत्र २३।१।१२॥
बलमदेणं —भगवती सूत्र ८।९।४३॥
बलविहीणया —पन्नवणा सूत्र २३।१।१६॥

२. पाणाणुकंपयाए, भूयाणुकंपयाए, जीवाणुकंपयाए, सत्ताणुकंपयाए।
—भगवती सूत्र ७।६।९॥

कायसुहया —पन्नवणा सूत्र २३।१।१२॥
बल-अमदेणं —भगवती सूत्र ८।९।४३॥
बल-विसिट्ठिया —पन्नवणा सूत्र २३।१।१६॥

प्रश्न ३१. निर्धन होना किन कर्मों का फल है ?

उत्तर दीन हीन प्राणियों को सताने से, किसी की अन्न एवं वस्त्रादि की प्राप्ति में विघ्न डालने से, निर्धनों को ठगाने से, उन के साथ झगड़ा करने से, उन्हें बन्धन में डालने से और अपने धन का अभिमान करने से निर्धन होता है।[1]

प्रश्न ३२. धनवान होना किन कर्मों का फल है ?

उत्तर दीन अनाथों पर कृपा करना और उन्हें सुख पहुँचाना, संकट में पड़े दुःखियों की सहायता करना तथा अन्न वस्त्रादि का प्रदान करना आदि शुभ कर्मों द्वारा जीव धनवान होता है।

प्रश्न ३३. कायर होना किस कर्म का फल है ?

उत्तर अन्य जीवों को भय उत्पन्न करने से, अकस्मात् धमाका करने से, दूसरों की इज्जत लूटने से, सिपाही-चोर-सर्प-सिंह-अग्नि-पानी-भूत-यक्ष आदि भयावने नामोच्चारण करके दूसरों को भयभीत करने से, शिशुओं एवं पशुओं को डरपोक बनाने एवं उन्हें चमकाने से और उन्हें ऐसा होता देख कर प्रसन्न होने से प्राणी कायर होता है।[2]

---

१. बन्ध-निर्देशो —भगवती सूत्र ८।९।४३॥
बन्ध-विवेचना —पन्नवणा सूत्र २३।१।१६॥

२. तिव्वदरिसणमोहणिज्जयाए—भगवती सूत्र ८।९।४०॥
[illegible]—पन्नवणा सूत्र २३।१।१३॥
भयवेयणिज्जस्स कम्मस्स उदएणं—ठाणांग सूत्र ४।४।३॥

प्रश्न ३५. शूरवीर होना किन कर्मों का फल है ?

उत्तर दीन दुःखी एवं छोटे मोटे आदमियों को अभय दान देने से, उन को भय से बचाने से, आते हुए आतंक आए हुए शत्रुओं को हिटाने से और अपने बल को पूरा कर दिखाने से प्राणी शूरवीर होता है।

प्रश्न ३६. कृपण होना किस कर्म का फल है ?

उत्तर पास में धन होते हुए दान न देने से, दान देते हुए दूसरों को रोकने से, दान करते हुओं को देख कर दुःखी होने से (कि हमें भी ऐसा करना पड़ेगा) इस के अतिरिक्त दान-धर्म की निन्दा करने से और अत्यन्त तृष्णावान होने से जीव कृपण होता है।

प्रश्न ३७. दाता किस कर्म से होता है ?

उत्तर गरीब होते हुए भी दान देने से, दान देते हुओं को देख कर प्रसन्न होने से, सामर्थ्यानुरूप दीन दुःखियों की सहायता करने से, सदैव दान करने की अभिलाषा रखने से और धर्मोन्नति के होते हुए कार्यों को सुन कर प्रसन्न-चित्त होने से श्रीमंत होकर दातार होता है।

प्र ४३. सुरूप होना किस कर्म का फल है ?

उत्तर स्वयं सुन्दराकार होने पर भी अपनी सुन्दरता का अभिमान न करने से सुरूपा स्त्री आदि को विकार-दृष्टि से न देखने से, कुरूपों का निरादर न करने से और शुद्ध शील पालने से जीव सुन्दरता को प्राप्त होता है।[1]

प्र ४४. धन पाकर भी उसे अपने काम में न ला सके यह किस कर्म का फल है ?

उत्तर दान दे चुकने के पश्चात् पश्चात्ताप करने से कि हाय ! मैं ने दान क्यों दे दिया। अपने स्वजनों को खान-पान, वस्त्राभूषण की अन्तराय देने से, सर्व प्रकार से समर्थ होते हुए स्वयं तो खान पान आदि अच्छे २ भोगे और अपने आश्रितों को तरसावे, उक्त सामग्री भोगते हुए अन्य को देख कर दुःखी होने से यह जीव धन प्राप्त करके भी उस के उपभोग से वञ्चित रहता है।[2]

प्र ४५. सुखोपभोगी होना किस करणी का फल है ?

उत्तर जो जीव अपने को प्राप्त हुई भोगोपभोग सामग्री को स्वयं अपने उपभोग में न लाकर उस को दान पुण्य

---

१. रूव-अमंदणं —भगवती सूत्र ८।९।४३॥

रूव-विनिट्ठिया —पन्नवणा सूत्र २३।१।१६॥

इट्ठा रूवा, इट्ठा लावण्णं —पन्नवणा सूत्र २३।१।१५॥

२. भोगंतराएणं, उवभोगंतराएणं —भगवती सूत्र ८।९।४४॥

भोगंतराए, उवभोगंतराए —पन्नवणा सूत्र २३।१।१७॥

प्रश्न ५१. क़साई किस कर्म से होता है ?

उत्तर हिंसा की प्रशंसा करने से, हिंसा करने की कला बताने से, हिंसा-विषयक ग्रन्थों के रचने से और दया-धर्म की निन्दा करने से जीव क़साई होता है।

प्रश्न ५२. दयालु होना किस करणी का फल है ?

उत्तर हिंसक की संगत छोड़ने से, हिंसक को उपदेश द्वारा दयावान् बनाने से, किसी को आजीविका देकर हिंसा छुड़वाने से जीव दयालु होता है।

प्रश्न ५३. अनाचारी होना किन कर्मों का फल है ?

उत्तर विकल-भाव रखने से, अशुद्ध एवं अभक्ष्य वस्तु के परिभोग से, आचारवान—मर्यादावान् की निन्दा करने से, अनाचार-सेवन में आनन्द मानने से, अनाचारियों का सहवास करने से और अनाचार को अच्छा समझने से मनुष्य अनाचारी होता है।

प्रश्न ५४. शुद्धाचारी होना किन कर्तव्यों का फल है ?

उत्तर अनाचारियों को शुद्धाचारी बनाने से, अनाचार के प्रति घृणा करने से, शुद्धाचारी की सेवा-सुश्रूषा एवं उसकी प्रशंसा करने से, अभक्ष्य का त्याग करने से और सदैव नीति के अन्दर वर्तने से प्राणी शुद्धाचारी होता है।

प्रश्न ५५. भाइयों में विरोध किस कर्म से उत्पन्न होता है ?

उत्तर हाथी, घोड़े, भैंसे, मेंढे, कुत्ते, मुर्गे और मनुष्यों को परस्पर लड़ाने और लड़ते हुओं को देख कर प्रसन्न होने से भाइयों में विरोध होता है, लड़ाई होती है।

प्रश्न ६०. सुकवि किस कर्म से होता है ?

उत्तर जिनराज एवं मुनिराज जी के गुणों का कीर्तन सुन कर प्रसन्न-चित्त होने से, शास्त्रकर्ता गणधरों एवं आचार्य-महाराजों की प्रशंसा करने से, ज्ञान-वृद्धि में अपना धन लगाने से, धर्म-कवियों को सहायता देने से, धर्म-कविता को गुप्त रहस्यों द्वारा प्रशंसा करने से विद्वान् कवि होता है।

प्रश्न ६१. दीर्घायु किस कर्म से मिलती है ?

उत्तर मारे जाने वाले जीवों को द्रव्य लगा कर छुड़ाने से, उन्हें खान-पान एवं स्थान की सहायता देने से, इन्द्रियों को छुड़ाने से, संसार के प्रति उदासीनता रखने से, जीवों पर दयाभाव लाने से, दीन अनाथों की सहायता करने से और साधुओं को निर्दोष आहार आदि देने से जीव दीर्घायु वाला होता है।[1]

प्रश्न ६२. अल्पायु वाला किस कर्म से होता है ?

उत्तर जीवों की घात करने से, किसी का यथार्थ गर्व तोड़ने से, किसी की आजीविका भंग करने से, साधुओं को अमनोज्ञ असाताकारी आहार आदि देने से, निर्दोष आहार लेने वाले साधकों को सदोष आहार देने से और अग्नि विष एवं शस्त्रादि द्वारा

---

1. तिहिं ठाणेहिं जीवा दीहाउयत्ताए कम्मं पगरेंति तंजहा —णो पाणे अइवाइत्ता भवइ, णो मुसं वइत्ता भवइ, तहारूवं समणं वा माहणं वा फासुएणं एसणिज्जेणं असण-पाण-खाइम-साइमेणं पडिलाभेत्ता भवइ।

—ठाणांग सूत्र ३।१।७॥

भटकाने से जीव स्थान २ पर फिर कर आजीविका करता है।

प्रश्न ७५. सुख-पूर्वक आजीविका किस कर्म से होती है ?

उत्तर दीन-हीन अनाथों को उन के स्थान में ही आहार वस्त्रादि पहुंचाने से, धर्मात्मा तथा उपकारी पुरुषों को सहायता देने से एवं उन के द्वारा धर्म-वृद्धि कराने से, स्वयं स्थिर-चित्त होकर धर्म-ध्यान करने से और स्थिर-स्वभावियों की कीर्ति करने से जीव घर बैठे सुख-पूर्वक आजीविका करता है।

प्रश्न ७६. यह जीव दूसरों को ठग कर कपट-पूर्वक आजीविका किस कर्म से करता है ?

उत्तर कपट-भाव से दीन जनों को दान देने से, मुनियों को भक्ति-रहित दान देने से, चोरादिक कुकर्मियों से व्यवहार करके आजीविका करने से, उन कुकर्मियों की प्रशंसा करने से और सत्यव्रत द्वारा निर्वाह करने वालों पर दोष चढ़ाने से जीव बड़ी कठिनता से धोका दे २ कर आजीविका चलाता है।

प्रश्न ७७. सच्चाई से आजीविका कौन करता है ?

उत्तर सरल-भाव से विनय सहित धर्मात्माओं को आहार देने से, दीनों की रक्षा करने से और निर्दोष आजीविका न मिलने पर क्षुधा आदि परिषह सहन कर ले परन्तु कुव्यापार न करने वाला विना कठिनता से सुख-पूर्वक आजीविका चलाता है।

प्रश्न ७८. सामुदानीय (सामूहिक) कर्म किस कारण बांधा जाता है ?

उत्तर मनुष्य अथवा पशु का जहां पर वध होता हो वहां बहुत से लोग खड़े देख रहे हों और मन में विचार कर रहे हों कि कब यह मारा जाए और हम अपने घरों को जाएं, राजाओं तथा संगठनों के संबन्ध में विपक्षी का सामूहिक रूप से अनिष्ट चिन्तन का आचरण करने से, एकत्रित हो कर सच्चे देव सच्चे गुरु एवं सच्चे धर्म की निन्दा करने से सामुदानिक कर्म बन्धता है, वे इकट्ठे ही पानी में डूब कर, आग में जल कर या मारी प्लेग आदि की लपेट में आकर एक दम मरते हैं।

प्रश्न ७९. एक दम बहुत से जीव इकट्ठे स्वर्ग में कैसे जाते हैं?

उत्तर धर्म महोत्सव, दीक्षोत्सव, केवलोत्सव, धर्म-सभा व्याख्यानादि में बहुत जन मिल कर हर्ष मनाते हैं, वैराग्य-भाव लावें और उन की प्रशंसा करें तो एक दम बहुत जीव स्वर्ग या मोक्ष में जाते हैं।

प्रश्न ८०. कोई बिना कारण ही द्वेष करे इस का क्या कारण होता है?

उत्तर किसी समय उसे दुःख दिया हो, उस को हानि पहुंचाई हो तो वह जीव बिना कारण ही द्वेष करता है।

प्रश्न ८१. बिना कारण स्नेह-भाव उत्पन्न हो इसका क्या कारण होता है?

उत्तर किसी समय उसे दुःख से छुड़ाया हो, उसे सुख पहुंचाया हो, वन में, पहाड़ में, या संग्राम में निराधार को आधार दिया हो तो वह बिना कारण स्नेह करता है।

प्रश्न ८२. अत्यन्त उपचार करने पर भी रोग दूर न हो और व्यन्तर आदि की व्याधि न छूटे इसका क्या कारण ?

उत्तर वैद्य होकर अनेक जीवों के साथ विश्वास-घात करे, जानता हुआ भी खराब औषध दे, रोगी का रोग बढ़ाए तथा ज्योतिषी होकर ग्रह नक्षत्र एवं भूत और व्याधि का डर बताए और उन्हें लूटे, देव देवियों की मान्यता करवा कर अपना स्वार्थ साधे तथा विष शस्त्र एवं अग्नि द्वारा आत्मघात करे तो अत्यन्त उपचार करने पर भी रोग बीमारी दूर न हो और व्यन्तर आदि की व्याधि न छूटे।

प्रश्न ८३. धनवान का धन धर्म-कार्यों में न लग सके इस का क्या कारण ?

उत्तर अन्य को कुशिक्षा देकर उसका द्रव्य खेल-तमाशे (वेश्यानृत्यादि) कुव्यसन में खरचाने से, अन्य की हानि होने पर प्रसन्न होने से, जुआ सट्टे आदि में धन को खो देने से वह प्राणी किसी समय धनवान हो भी जाए तब भी उसका धन कुमार्ग में तो लग जाए किन्तु धर्म-कार्यों में नहीं लगने पाता।

प्रश्न ८४. कोई जीव गर्भ में ही क्यों मृत्यु पाता है ?

उत्तर दूसरों के गर्भ को, अपने गर्भ को अथवा अपने सम्बन्धी के गर्भ को औषधोपचार आदि द्वारा गलाने सड़ाने और गिराने से वह जीव गर्भ में ही मृत्यु पाता है।

प्रश्न ८५. हित-शिक्षा बुरी क्यों लगती है ?

उत्तर भ्रष्टाचारी की संगत करने से, पाप-कार्य को धर्म कहने से और सत्य देव, सत्य गुरु तथा सत्य धर्म की निन्दा करने से जीव पाप करते हुए भी अपने आपको धर्मी समझता है।

प्रश्न ९०. कोई प्राणी व्यभिचारी क्यों बन जाता है?

उत्तर किसी जन्म में वेश्या का कर्म किया हो (जिस का फल अभी तक न भोगा हो) अथवा वेश्या का संग किया हो, कुशीलियों की प्रशंसा करता हो, नर मादा पशु पक्षी आदि का संयोग मिलाता हो और संयोग होते देख कर प्रसन्न-मन होता हो तो वह प्राणी व्यभिचारी बनता है।

प्रश्न ९१. शीलवान किस कर्म से होता है?

उत्तर स्वयं शील पालने से, शीलवानों की महिमा करने से एवं उन की सहायता करने से और कुशीलियों का संग छोड़ने से मनुज शीलवान् होता है।[1]

प्रश्न ९२. स्त्रियां क्यों मरें?

उत्तर बार बार ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने और तोड़ने से तथा बहुत स्त्रियों का पति हो उन्हें मारने से।

प्रश्न ९३. दाह-ज्वर जिस कर्म से होता है?

उत्तर मनुष्य तथा पशुओं पर अधिक भार लादने एवं उन से अधिक काम लेने से।

प्रश्न ९४. बाल-विधवा किस कर्म से होती है?

---

१. ये ९१ प्रश्नोत्तर मुदृष्ट-तरंगिणी नामक दिगम्बर जैन ग्रन्थ के हैं और पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज के बनाए हुए ध्यानकल्पतरु नामक ग्रन्थ से साभार उद्धृत किये हैं।

उत्तर — अन्य को कुशिक्षा देकर कुमार्ग पर चलाने से, गुरु एवं पिता के हितकर वचन न सुनने से और शिक्षा देने वाले की निन्दा करने से जिह्वा ति-तुर्री लगती है।

प्रश्न ८६. जाति-स्मरण ज्ञान और अवधि-ज्ञान किन कर्मों से होता है?

उत्तर — जिन्होंने तप संयम शुद्ध पाला हो, ज्ञानियों की सेवा-भक्ति की हो और ज्ञान की महिमा एवं बहुमान किया हो उन्हें जाति-स्मरण ज्ञान एवं अवधि-ज्ञान उत्पन्न होता है।

प्रश्न ८७. कोई व्रत आदि का प्रत्याख्यान क्यों नहीं कर सकता है?

उत्तर — दूसरों का व्रत भंग करने से, गुरुजनों को दोष लगाने से, अन्य का व्रत भंग हुआ देख कर प्रसन्न होने से, व्रत लेकर अपने परिणामों में उलटे-सुलटे संकल्प लाने से और बार २ व्रतों को भंग करने से जीव व्रत आदि का प्रत्याख्यान नहीं कर सकता है।

प्रश्न ८८. कोई प्राणी घातकों के हाथ घात क्यों पाता है?

उत्तर — कसाइयों से लेन देन करने से, कसाइयों को पशु पक्षी देने से, कसाई-पन का कृत्य करने से, धोखा देकर जीवों को मारने व अन्य के द्वारा मरवा देने से, वनचरों का शिकार करने से और मांस-भक्षण करने से घातकों के हाथों मरना पड़ता है।

प्रश्न ८९. पाप करते हुए भी अपने को कोई धर्मी समझता है इस का क्या कारण?

उत्तर भ्रष्टाचारी की संगत करने से, पाप-कार्य को धर्म कहने से और सत्य देव, सत्य गुरु तथा सत्य धर्म की निन्दा करने से जीव पाप करते हुए भी अपने आपको धर्मी समझता है।

प्रश्न ९०. कोई प्राणी व्यभिचारी क्यों बन जाता है?

उत्तर किसी जन्म में वेश्या का कर्म किया हो (जिस का फल अभी तक न भोगा हो) अथवा वेश्या का संग किया हो, कुशीलियों की प्रशंसा करता हो, नर मादा पशु पक्षी आदि का संयोग मिलाता हो और संयोग होते देख कर प्रसन्न-मन होता हो तो वह प्राणी व्यभिचारी बनता है।

प्रश्न ९१. शीलवान किस कर्म से होता है?

उत्तर स्वयं शील पालने से, शीलवानों की महिमा करने से एवं उन की सहायता करने से और कुशीलियों का संग छोड़ने से मनुज शीलवान् होता है।[१]

प्रश्न ९२. स्त्रियां क्यों मरें?

उत्तर बार बार ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने और तोड़ने से तथा बहुत स्त्रियों का पति हो उन्हें मारने से।

प्रश्न ९३. दाह-ज्वर जिस कर्म से होता है?

उत्तर मनुष्य तथा पशुओं पर अधिक भार लादने एवं उन से अधिक काम लेने से।

प्रश्न ९४. बाल-विधवा किस कर्म से होती है?

---

१. ये ९१ प्रश्नोत्तर सुदृष्ट-तरंगिणी नामक दिगम्बर जैन ग्रन्थ के हैं और पूज्य श्री अमोलक ऋषि जी महाराज के बनाए हुए ध्यानकल्पतरु नामक ग्रन्थ से साभार उद्धृत किये हैं।

श्न ११९. सिंह क्यों होता है ?

त्तर क्रोध में संतप्त हो दूसरों को मारने से।

श्न १२०. सर्प क्यों होता है ?

त्तर क्रोध और क्लेश एवं संतप्तावस्था में काल करने से।

(संपादक)

श्न १२१. गधा क्यों होता है ?

उत्तर अभिमान-वश अकार्य करने से तथा निर्लज्जता धारण करने से और बिना परिश्रम किसी का माल बैठे २ खाने से।

प्रश्न १२२. कुत्ता क्यों होता है ?

उत्तर अभिमान-वश अकार्य करने से, अपने भाइयों से वैर-विरोध रखने से तथा निर्लज्जता धारण करने से।

(संपादक)

प्रश्न १२३. वानर कौन होता है ?

उत्तर इन्द्रियों को सदैव चञ्चल रखने वाला वानर होता है।

(संपादक)

प्रश्न १२४. बकरा एवं मुर्गा किस कर्म से होता है ?

उत्तर छल-पूर्वक कमाई करने से, परस्पर लड़ाई करते रहने से और काम-वासना में लिप्त रहने से।

(संपादक)

प्रश्न १२५. कबूतर किस कर्म से होता है ?

उत्तर दूसरों से डरने वाला और आपस में लड़ने वाला, व्यवहार में सरलता दिखाते हुए कपटाचरण करने वाला और काम-वासना में लिप्त रहने वाला कबूतर योनि में जन्म लेता है। (संपादक)

प्रश्न १३४. यश का कार्य करने अपयश क्यों होता है ?
उत्तर दूसरे द्वारा किया गया उपकार न मानने से ।

प्रश्न १३५. ऊपर से नीरोगी दिखाई दे और अन्दर से रोगी हो इस का क्या कारण ?
उत्तर लांच (रिश्वत) लेकर झूठा न्याय करने से ।

प्रश्न १३६. संयोग होकर वियोग क्यों होता है ?
उत्तर कृतघ्नता, मित्र-द्रोह और विश्वास-घात करने से ।

प्रश्न १३७. डरपोक स्वभाव वाला किस कारण होता है ?
उत्तर कठोर दण्ड देने से एवं दूसरों को डराने से ।

प्रश्न १३८ किसी से तपस्या क्यों नहीं हो पाती ?
उत्तर तप का अभिमान करने से एवं दूसरों की तपस्या में विघ्न डालने से ।

प्रश्न १३९ मन को अच्छी न लगने वाली भाषा क्यों सुननी पड़े ?
उत्तर वाक्य-चतुराई का अभिमान करने से और कठोर वचन बोलने से ।

प्रश्न १४० तरुणावस्था में स्त्री क्यों मरे ?
उत्तर भोग की तीव्राभिलाषा रखने से और अमर्यादित विषय सेवन करने से ।

प्रश्न १४१ भूख अधिक क्यों लगे ?
उत्तर आश्रितों को भूखा रखने से ।

प्रश्न १४२ एक साथ सोलह रोग किस कारण उत्पन्न होते हैं ?
उत्तर ग्राम तथा नगरों को लूटने से एवं उन्हें उजाड़ने से ।

प्रश्न १४३ अपने से पोषित मनुष्यों का मन क्यों बदल जाए ?
वस्तु दिखा कर खराब देने दिलाने और

पद्यमय शुभाशुभ कर्मफल

पीछे वर्णन किये गए कतिपय विषयों का कुछ विस्तार से वर्णन श्री काशीराम जी चावला ने हिन्दी पद्य में किया है जो यहां पर उद्धृत किया जाता है—

प्रश्न १

किस कारण से मानुष स्वामिन् !, बहरा बधिर हो जाता है।
दोनों कान तो ठीक हैं होते, पर न वह सुन पाता है॥

उत्तर

ऋषि मुनियों की निन्दा सुन कर, मन में हर्ष जो पाता है।
गुप्तरूप से सुने जो बातें, छल बल से सो जाता है॥
किसी से और की निन्दा चुगली, सुन कर जो सुख पाता है।
दूषित अपने कानों को जो, इस प्रकार बनाता है॥
इस का फल यह मिलेगा मर कर, जहां कहीं भी जाएगा।
कान तो उस के दोनों होंगे, पर ना सुनने पाएगा॥

प्रश्न २

किस कारण से स्वामिन् ! मानुष, अपनी आँख गंवाता है।
उस से बड़ा कुरूप है बनता, काणा वह कहलाता है॥

उत्तर

खोटी दृष्टि पर-नारी पर, जो कोई दुष्ट दौड़ाता है।
पर-सम्पत्ति देख के या जो, ईर्ष्या मन में लाता है॥

आंख में छोटे जीवों को या, कांटा कोई चुभाता है।
उन की आंख निकाल के पापी, मन में जो हर्षाता है॥
इन पापों का प्राणी फिर वह, सच्चा फल यह पाता है।
एक नयन है होता अपना, काना वह बन जाता है॥

प्रश्न ३

किन पापों से जीव यह स्वामिन, अन्धा यहां हो जाता है।
नेत्र दोनों खोकर जग में, संकट बहु ही पाता है॥

उत्तर

कीट पतंग की आंखों का जो, करता नाश है यह सुनो।
या बच्चों को अंधा करना, जान बूझ कर आंख जो॥
और किसी की भी या दृष्टि, निज कुभाव से करे खराब।
देना पड़ेगा उस पापी को, इन कर्मों का सभी हिसाब॥
जैसा किया वैसा ही यह, अगले जन्म में पाएगा।
अंधा होकर इस जग में, ऐसा प्राणी आएगा॥
या जो शहद के छत्ते नीचे, पापी आग लगाता है।
अगला जन्म जहां भी पावे, अन्धा वह बन जाता है॥

प्रश्न ४

किन पापों से गूंगा बनता, स्वामिन! मुझे बता दीजे
जीवों के कल्याण-निमित्त यह, मर्म मुझे समझा दीजे।

उत्तर

अर्हन्‌-देव या गुरुओं की, जो निन्दा पापी करता है।
साधु-मुनि या दया-धर्म की, निन्दा से न डरता है॥

मात पिता को अपने या जो, गाली मुंह से देता है।
अपने सिर पर पाप वह भारी, ऐसा करके लेता है॥
मर कर वह जन अगले भव में, जन्म जहां भी पाता है।
गूंगा बन कर जन्म है लेता, गूंगा ही मर जाता है॥

प्रश्न ५

पंगु जीव हैं कैसे बनते, यह मुझ को दीजे समझा।
एक टांग या दोनों टांगें, कैसे बैठते हैं कटवा॥

उत्तर

छोटे छोटे जीवों की जो, लातें काट गिराते हैं।
खेल खेल में उन के पाँव, काट के खुश हो जाते हैं॥
चलते फिरते उन जीवों को, लंगड़ा देते कभी बना।
या हैं सारी टांगें उनकी, देते पापी काट गिरा॥
या कोई होते दुष्ट हैं ऐसे, ज़ोर से बांधते हैं रस्सी।
उनका रक्त न चलता वहां पर, जाती इतनी है कस्सी॥
धीरे धीरे टाँगें उनकी, सूख वहां से हैं जाती।
चलने में भी कष्ट है होता, जान बड़ा है दुःख पाती॥
इस प्रकार से जो भी करते, जीवों की हैं टांगें भंग।
ऐसे पंगु हैं बन जाते, संकट पाकर होते तंग॥

प्रश्न ६

बड़े कुरूप जो बन कर मानुष, इस जग अन्दर आते हैं।
किस कारण से भूंडा रूप वे, ऐसा स्वामिन्! पाते हैं॥

---

१. जीवाणं हणमाणा वा उस्सुयमाणा वा सत्तविह-बंधगा वा, अट्ठ-विह-बंधगा वा॥ —भगवती सूत्र ५।४।६॥

प्रश्न ८

किस कारण से मानुष जग में, निर्धन अति बन जाता है।
धन के पीछे भागा फिरता, कौड़ी पर न पाता है॥
श्रम भी पूरा पूरा करता, हाथ न पर कुछ आता है।
धन की तृष्णा में ही रह कर, तड़प तड़प मर जाता है॥

उत्तर

दान के करने से दानी को, जो कोई परे हटाता है।
आप भी दान के करने से या, जी को सदा चुराता है॥
पर-धन को जो धोके छल से, लूट के कोई लाता है।
जहां कहीं भी जाता है वह, झूठ और पाप कमाता है॥
लोभ लालसा में या पड़ कर, नफ़ा जो बहुत ही खाता है।
तंग करता है दीन दुःखी को, कभी ना प्रभु को ध्याता है॥
ऐसा जीव हे गौतम ! मर कर, निर्धन बन कर आता है।
निर्धनता के कष्ट भोग कर, संकट कई उठाता है॥

प्रश्न ९

किस करणी से प्राणी जग में, धन सम्पत्ति पाता है।
करोड़ों का है स्वामी बनता, सुख और चैन उड़ाता है॥

उत्तर

दोष रहित जो भोजन द्वारा, मुनि-सेवा नित करते जन।
श्रद्धा भक्ति से हैं करते, सदा ही पूर्ण अपना मन॥
दीन दुःखी की सेवा करते, उस में देते अपना धन।
उन की भी हैं सेवा करते, जो होते हैं सज्जन जन॥

प्रश्न ८

किस कारण से मानुष जग में, निर्धन अति बन जाता है।
धन के पीछे भागा फिरता, कौड़ी पर न पाता है॥
श्रम भी पूरा पूरा करता, हाथ न पर कुछ आता है।
धन की तृष्णा में ही रह कर, तड़प तड़प मर जाता है॥

उत्तर

दान के करने से दानी को, जो कोई परे हटाता है।
आप भी दान के करने से या, जी को सदा चुराता है॥
पर-धन को जो धोके छल से, लूट के कोई लाता है।
जहां कहीं भी जाता है वह, झूठ और पाप कमाता है॥
लोभ लालसा में या पड़ कर, नफ़ा जो बहुत ही खाता है।
तंग करता है दीन दुःखी को, कभी ना प्रभु को ध्याता है॥
ऐसा जीव है गौतम ! मर कर, निर्धन बन कर आता है।
निर्धनता के कष्ट भोग कर, संकट कई उठाता है॥

प्रश्न ९

किस करणी से प्राणी जग में, धन सम्पत्ति पाता है।
करोड़ों का है स्वामी बनता, सुख और चैन उड़ाता है॥

उत्तर

दोष रहित जो भोजन द्वारा, मुनि-सेवा नित करते जन।
श्रद्धा भक्ति से हैं करते, सदा ही पूर्ण अपना मन॥
दीन दुःखी की सेवा करते, उस में देते अपना धन।
उन की भी हैं सेवा करते, जो होते हैं सज्जन जन॥

किन्तु [illegible], फिर पीछे पछताता है।
[illegible]॥

प्रश्न १३

खोटे पुत्र पुत्री घर में, आकर जन्म जो लेते हैं।
किन पापों के कारण स्वामिन्!, आकर ये दुःख देते हैं॥

उत्तर

प्रेमियों में जो द्वेष फैला कर, परस्पर देते उन्हें लड़ा।
भाइयों में जो फूट डाल कर, करते हैं उत्पात बड़ा॥
जहां भी दोनों मिलकर बैठे, भाई होते हैं दो चार।
उन से यह ना सहन है होता, उन में उत्पात करते यार॥
प्रेम से रहना किसी का उन को, किंचित भी ना भाता है।
देख के लड़ते झगड़ा करते, मन उन का हर्षाता है॥
ऐसे पापियों के गृह अन्दर, जन्म कपूत का होता है।
ऐसे खोटे पुत्र पाकर, सदा ही रोना होता है।

प्रश्न १४

आज्ञाकारी शुद्धाचारी, बच्चे जो जन पाते हैं
किन कर्मों के कारण स्वामिन्, ऐसे बच्चे आते हैं

उत्तर

औरों के जो देख के बच्चे, हर्षे हैं मन में बहु भ्रात
शुभ सन्तान वह देख औरों की, है प्रसन्न जो हो जात
किसी के बच्चे को उत्पात जो, करता देख वह पाता
उसको अति ही प्यार प्रेम से, बैठ के वह समझाता

दोषों के वा दुर्व्यसन को, अच्छी तरह भगाता है।
कुमार्ग से उसे हटा कर, सन्मार्ग पर लाता है॥

बुरी संगत जो उसकी होती, उस से सब छुड़वाता है।
धर्म-नियम और व्रत आदि के, अन्दर उसे लगाता है॥

धर्म-स्थान में जाकर अच्छी, शिक्षा उसे दिलाता है।
वहां पर अच्छी कथा-वार्ता, उस को जो सुनवाता है॥

इस प्रकार से उसके दोषों को, देता है दूर बहा कर।
उसके मात पिता के मन को, देता है वह हर्ष से भर॥

ऐसे सुकृत करके और के, बच्चे नेक बनाता है।
आप भी उसके फल-स्वरूप वह, नेक सन्तान को पाता है॥

प्रश्न १५

पाला पोसा युवक जो पुत्र, अकाल-मृत्यु को पाता है।
इस का सार बता दो सद्गुरु! कौन कर्म फल लाता है॥

उत्तर

रख कर माल अमानत का जो, पापी चट कर जाते हैं।
बिल्कुल जाते मुकर हैं उस से, पैसा नहीं लौटाते हैं॥

भूल जाए कोई वस्तु घर में, लेते हैं वे उसे छिपा।
पूछने पर भी देते न हैं, कुछ भी उस का पता बता॥

पड़ी वस्तु जो पाएं राह में, उस को लेते सदा दबा।
भूल से पैसे अधिक जो देवे, देते कभी न उसे बता॥

मांगी वस्तु लाए किसी से, देने वाला जाए भूल।
लेते उसे पचा हैं पापी, पता न देते उस का मूल॥

दीन गरीबों को ऋण देकर, उन को बहुत सताते हैं।
असली रकम से कई गुणा वे, सूद उन से खा जाते हैं॥

माला तो है हाथ में रखती, दिल के अन्दर होता खोट।
करके पाप न उस के मन पर, लगती किञ्चित भी है चोट॥

ऊपर ऊपर से लोगों को, भक्ति वड़ी दिखाती है।
किन्तु मन में पाप है होता, उस को सदा छिपाती है॥

मुँह से तो कुछ और है कहती, मन में है कुछ होता और।
घर तो कहती 'कथा में जाऊँ', जाती पर किसी ओर ही ठौर॥

नारी-धर्म को इस प्रकार जो, काला दाग़ लगाती है।
अगले जन्म जवानी ही में, विधवा वह वन जाती है॥

प्रश्न २२

कोढ़ी[1] कैसे हो जाता है, सत्गुर यह भी वतलाना।
अंधेर दूर हो दुनियां का, ऐसा मुझे उत्तर फरमाना॥

उत्तर

जो मोर आदि अनेकों ही, जीवों को मार गिराता है।
और अपने लालच की खातिर, जंगल में आग लगाता है॥
वह देह मनुष्य की पा कर भी, विल्कुल कोढ़ी हो जाता है।
रोम रोम में हैं कीड़े पड़ते, नहीं चैन मिनट भर पाता है[2]॥

---

१. प्रश्न २२, २३, २४ कवि श्री अमर चन्द जी महाराज (पञ्जाबी) द्वारा रचित हैं।

२. कोढियं, दोडयरियं (जलोदर) भगंदलियं अरिसिल्लं कासिल्लं, सासिल्लं, सुहे, सूयहत्थं, सूयपायं, सडिय-पायंगुल्यिं, सडिय-कण्ण-णासियं।

—विपाक सूत्र ७।६॥

Do not wish anybody ill. Your evil habits will reduce you to poverty.

वह अहंकारी मर कर अपना, अगला भव जब पाता है।
निर्बल होकर जन्म है लेता, बल उस का छिन जाता है॥

प्रश्न २६

अब मुझ को बतलाइये गुरुवर, बल कैसे नर पाता है।
किन कर्मों से मानव शक्ति-शाली यहां बन जाता है॥

उत्तर

विधवाओं की जो सेवा कर, उन को सुख पहुंचाता है।
या जो करें तपस्या उन का, सेवक वह बन जाता है॥
निर्बल हों जो उन्हें सहायता, पूरी पूरी देता है।
प्रति उपकार न उन से कुछ भी, किसी रूप में लेता है॥
मानव होकर दानवता के, करता जग में जो व्यवहार।
उस के अत्याचार का करता, पूरे बल से है संहार॥
इस साहस और सेवा का वह, अन्ततः पाता है यह फल।
उस की देह और आतमा अन्दर, आजाता है अद्भुत बल॥[१]

प्रश्न २७

कई पुरुषों की रहती स्वामिन्, स्वस्थ सदा ही यह काया।
किन कर्मों का सतगुर उन्हों ने, फल होता है यह पाया॥

उत्तर

रोगी की जो सेवा करते, औषध लाकर देते हैं।
उस का प्रति-उपकार न कुछ वे, किसी रूप में लेते हैं॥
धूप कड़कती या जाड़े में, तड़पता देखते जो प्राणी।
उस की रक्षा करते हैं वे, देकर उस को जल-पानी॥

---

१. Money spent on myself may bec
stone about my neck, money sp

पराधीन औरों को करते, फल उस का यह पाते हैं।
अगले जन्म के अन्दर वे खुद, पराधीन बन जाते हैं॥

प्रश्न ३१

छोटी जाति में जो प्राणी, जाकर जन्म को पाता है।
किन पापों के कारण स्वामिन्!, दीन यहां बन जाता है॥

उत्तर

ऊंचे कुल में पैदा होकर, अपने कुल का करे जो मान।
नीचा औरों को जो समझे, करके जाति का अभिमान॥
जाति-मद में भरा जो रहता, घृणा और से करता है।
औरों का अपमान भी करने, से न वह कुछ डरता है॥
अपने आप को ऊंचा जाने, औरों को जाने वह नीच।
अपने आप को स्वर्ण समझता, औरों को समझे वह कीच॥
जाति-मद में हो उन्मत्त वह, करता मन में है हंकार।
औरों को वह सेवक जाने, अपने को समझे सरदार
चाहे अक्षर एक पढ़ा न, न ही गुण हो कोई और
फिर भी जाति-मद से समझे, अपने आपको पूज्य हर ठौर
दुराचार भी करता हो और, करता और भी सारे पाप
फिर भी जाति-मद से समझे, ऊंचा बहुत ही अपना आप
ऐसी खोटी वृत्ति का यह, फल अभिमानी पाता है
मर कर अगला जन्म जो लेता, नीच घरों में जाता है

प्रश्न ३२

किसी किसी पर दोष जो स्वामिन्!, झूठा यहां लग जाता है
किन कर्मों के फल से ऐसा, दुःख वह जीव उठाता है

उत्तर

ईर्ष्या से जो मनुज किसी पर, झूठा दोष लगाता है।
अपयश उसका द्वेष के वश हो, विन कारण फैलाता है॥
किसी की वहु वेटी पर मिथ्या, दोषारोपण करता है।
कहने से निर्मूल भी वातों के, न कुछ वह डरता है॥
मंगनी किसी की होती हो जो, उस में वाधा देता डाल।
सौदा किसी का होता रोके, कह कर उस को खोटा माल॥
काम किसी का वनता हो तो, झूठे उस में दोष निकाल।
वनता वनता काम किसी का, है हत्यारा देता टाल॥
झूठे दोष लगा कर जो कि, मन में खुश हो जाता है।
काम विगाड़ना औरों का ही, जिस के मन को भाता है॥
सिर पर मिथ्या. दोष हैं लगते, निन्दनीय वन जाता है।
ठौर ठौर में सव लोगों की, वह फटकारें खाता है॥[१]

प्रश्न ३३

किसी के वोले अच्छे वोल भी, सुन कर नहीं जो भाते हैं।
इस के विषय में आप गुरु जी ! मुझ को क्या फरमाते हैं॥

उत्तर

रस-स्वाद के वश में होकर, पशु-पक्षी जो खाते हैं।
भून भून कर मांस को जिह्वा, से जो चट कर जाते हैं॥
जिस जिह्वा द्वारा करना चाहिये, मानुप को निर्दोष आहार।
खानी चाहिये कोई ना वस्तु, दूषित हो जो किसी प्रकार॥

---

१. जे णं परं अलिएणं असंतएणं अब्भक्खाणेणं अब्भक्खाइ, तस्स णं तहप्पगारा चेव कम्मा कज्जंति। —भगवती सूत्र ५।७।१४॥

ऐसा दान निमित्त विद्या के, जो भी महान देता है।
उस का शुभ फल अगले जन्म में, विद्या को पा लेता है॥

प्रश्न ३७

निर्भयता है कैसे आती, यह मुझ को समझाओ जी।
जिन कर्मों से भय मिट जाए, यह मुझ को बतलाओ जी॥

उत्तर

जो प्राणी भय-भीतों को जा, ढारस खूब बंधाता है।
फंसे हुए जो कष्टों में हों, उन को मुक्त कराता है॥
चुंगल में दुष्टों के जो हों, उन को जा छुड़वाता है।
आपत्ति हो जिन पर आई, उन के दुःख मिटाता है॥
संकट किसी पर आए जब, तो दुःखी स्वयं हो जाता है।
जब तक सुखी न देखे उस को, चैन कभी ना पाता है॥
देश पे संकट आए जब, तो सेवा अपनी है देता।
प्राणों तक की बलि देन का, व्रत है मन में ले लेता॥
इन कर्मों का फल वह प्राणी, अन्त को ऐसा पाता है।
निर्भयता निर्भीकता को वह, अगले भव में लाता है।

प्रश्न ३८

कई कई प्राणी इस जग अन्दर, प्रसन्न-वदन वे होते हैं।
कमल-सदृश हैं खिले वे रहते, कभी न रोते धोते हैं॥
किन कर्मों से मृदु-स्वभाव वे, इस प्रकार का पाते हैं।
जाते हैं या बोलते जहां भी, सब के मन को भाते हैं॥

उत्तर

अच्छी अच्छी बातें कर जो, औरों को बहलाते हैं।
सेवा कर या औरों की वे, मन उन का हर्षाते हैं॥
गाली से या कटु-वचन से, मन न कभी दुखाते हैं।
दुःख-युत और कष्ट-युत को, सान्त्वना आ दिलवाते हैं॥
ऐसी भावना सुन्दर रख कर, अगला जन्म जो पाते हैं।
प्रसन्न-मुख हैं सदा ही रहते, क्षुब्ध न देखे जाते हैं॥

प्रश्न ३०

किसी किसी के प्रभु जी! होते, मीठे सुन्दर ऐसे बोल।
मानों उन में देते हैं वे, डलियां मिश्री की ही घोल॥
किस कारण से स्वामिन्! वे नर, मीठी वाणी पाते हैं।
खुशी स्वयं वे होते जिस से, सुख सब को पहुंचाते हैं॥

उत्तर

सत्य-व्रत के पालन में जो, आयु सभी बिताते हैं।
किसी भी कारण से वे मिथ्या, वचन न बोल सुनाते हैं॥
किसी को न वे गाली देते, मुख से बुरा न कहते हैं।
और जो मूर्ख कड़वा बोले, उस को भी वे सहते हैं॥
जब भी बोलना होता है तब, बात को लेते हैं वे तोल।
बिना विचारे सोचे न वे, मुख को अपने लेते खोल॥
साक्षी झूठी कभी न देते, झूठ से वह घबराते हैं।
जो कुछ मन में वही हैं कहते, मन को शुद्ध बनाते हैं॥
ऐसे प्राणी वाणी-संयम, और जो सत्य को लेते धार।
अगले जन्म में जहां भी जावें, पाते हैं वे सुख अपार॥

मधुर-भाषी जो बनना चाहे, मन्त्र को धारण कर ले नार।
वाणी पर वह संयम राखे, बोले ना बिना विचारे नार॥

प्रश्न ४०

किन कर्मों से मानुष जग में, सर्व-प्रिय बन जाता है।
जहां जहां भी जाता है वह, सब के मन को भाता है॥

उत्तर

पूर्ण रूप से जो नर अपना, सच्चा धर्म निभाता है।
पाप कर्म के निकट न जाता, कपट से वह घबराता है॥
सीधे मार्ग पर है चलता, खोटी राह पर जाता ना।
धर्म-कमाई सदा है खाता, पैसा पाप का लाता ना॥
नीयत साफ सदा है रखता, छल से रहता सदा है दूर।
दम्भ कपट से परे है रहता, डालता उन के सिर पर धूर॥
पर-नारी को माता समझे पर-धन विष्ठा जाने वह।
अपने जैसी आत्मा बैठी, सब के अन्दर माने वह॥
दया-धर्म को सब से ऊंचा, धर्म जान कर लेता पाल।
संकट चाहे कितने आवें, देता दया-धर्म न टाल॥
इन शुभ-कर्मों के वह कारण, सर्व-प्रिय बन जाता है।
जाए बैठे जहां भी वह जन, सब के मन को भाता है॥

प्रश्न ४१

सारी दुनियां आज्ञा माने, टालने की न होय मजाल।
किस करणी से गुरुवर! जग में, होता ऐसा भाग्य विशाल॥

उत्तर

तन मन धन से जो नर कार्य, पर-स्वार्थ के करता है।
स्वार्थ का वह लेश न रखे, पापों से वह डरता है॥

गाने. उस को सदा कमाता है।
साधु-सेवा न करता, आप आहार न खाता है॥
दीन गरीब अधिकारी की यह, सेवा करना जाने धर्म।
परोपकार को मानता है यह, मानव-जन्म का सच्चा मर्म॥
पापी जो कोई पशु पक्षी को, जाकर मारना चाहता है।
परोपकारी प्राणी उनको. उस से जा छुड़वाता है॥
और भी ऐसे पर हितार्थ, काम नित्य जो करता है।
आदर और सम्मान का पात्र, बन कर सदा विचरता है॥
उस की आज्ञा सब ही पालें, सब ही उस का करते मान।
सर्वथा उस को लाभ है होता, होती उस की कभी न हान॥

प्रश्न ४२

सुन्दर देह और निर्मल बुद्धि, किन पुण्यों का होता फल।
घर घर में है आदर होता, शोभा आती आप है चल॥

उत्तर

ब्रह्मचर्य के उत्तम व्रत को, भली प्रकार निभाए जो।
पापों का कर नाश तपों से, काया शुद्ध बनाए जो॥
सात्विक भावना सदा ही रख कर, शीलवान् है जो होता।
व्रत और नियम पाल के सारे, पाप की मैल को है धोता॥
बुरा किसी का चाहता नहीं, और नहीं किसी का बुरा करे।
मन्द-विचारों को मन अन्दर, लाने से वह सदा डरे॥
कर्म और भावना दोनों अच्छे, जिस जन के हो जाते हैं।
अच्छे फल वह अगले जन्म में, उस जन को ये आते हैं॥

प्रश्न ४२

जिनराज! कहो इस जीव को, मुक्ति किस प्रकार से आती है।
जन्म-मरण का नाश हो कैसे, आनन्द आत्मा पाती है॥

उत्तर

जिन-सूत्रों का कर अनुसरण जो, तप में समय लगाता है।
महाव्रत कर पाञ्चों धारण संयम खूब निभाता है॥
तप के द्वारा लेता है वह, पिछले कर्म समाप्त कर।
कर्म और न बांधता आगे, मन शुद्धि से जाता भर॥
इन्द्रियें सब संयम में रखता, मन पर काबू पाता है।
तृष्णा डाकिन को वह संयम-व्रत से मार भगाता है॥
शुक्ल-ध्यान के द्वारा बैठ, समाधि में लग जाता है।
जन्म-मरण का काट के चक्कर, अजर अमर पद पाता है॥

अभिमत

गीतार्थ-स्वरूप—

लेखक—आत्मनिधि मुनि 'त्रिलोक'

प्रकाशक—लाला ताराचन्द सूर्यकुमार जैन,

होशियारपुर (पंजाब)

मुनि श्री द्वारा पहले "गच्छाचार पइन्नयं" "हम सुशील कैसे बनें ?" आदि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—जो बहुत उपयोगी हैं। प्रस्तुत पुस्तक भी अपने विषय को शास्त्राधार से स्पष्ट करने में पूर्ण समर्थ होगी। 'गीतार्थ' शब्द का अर्थ, गीतार्थ अगीतार्थ का स्वरूप आदि समझने के लिये यह पुस्तक अवश्य देखनी चाहिये। मुनि श्री ने इस प्रकार शास्त्रीय और चतुर्विध संघ के लिये उपयोगी साहित्य को प्रकाशित कर समाज पर महान उपकार किया है। इस का लाभ समाज को अवश्य लेना चाहिये। ५ नये पैसे भेज कर प्रकाशक से पुस्तक प्राप्त हो सकेगी।

—"सम्यग्दर्शन" सैलाना
(C. P.)

अभिमत

...र्थ-स्वरूप—

लेखक—आत्मनिधि मुनि 'त्रिलोक'
प्रकाशक—लाला ताराचन्द सूर्यकुमार जैन,
होशियारपुर (पंजाब)

मुनि श्री द्वारा पहले "नमस्कार रहस्य" "हम सुशील कैसे बनें ?" ादि पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—जो बहुत उपयोगी हैं। प्रस्तुत स्तक भी अपने विषय को शास्त्राधार से स्पष्ट करने में पूर्ण समर्थ ोगी। 'गीतार्थ' शब्द का अर्थ, गीतार्थ अगीतार्थ का स्वरूप आदि मझने के लिये यह पुस्तक अवश्य देखनी चाहिये। मुनि श्री ने इस कार शास्त्रीय और चतुर्विध संघ के लिये उपयोगी साहित्य को प्रकाशित र समाज पर महान उपकार किया है। इस का लाभ समाज को वश्य लेना चाहिये। ५ नये पैसे भेज कर प्रकाशक से पुस्तक प्राप्त सकेंगे।

—"सम्यग्दर्शन" सैलाना
(C. P.)

प्रश्न ४३

जिनराज! कहो इस जीव को, मुक्ति किस प्रकार से आती है।
जन्म-मरण का नाश हो कैसे, आनन्द आत्मा पाती है॥

उत्तर

जिन-सूत्रों का कर अनुसरण जो, तप में समय लगाता है।
महाव्रत कर पाञ्चों धारण संयम खूब निभाता है॥
तप के द्वारा लेता है वह, पिछले कर्म समाप्त कर।
कर्म और न बांधता आगे, मन शुद्धि से जाता भर॥
इन्द्रियें सब संयम में रखता, मन पर काबू पाता है।
तृष्णा डाकिन को वह संयम-व्रत से मार भगाता है॥
शुक्ल-ध्यान के द्वारा बैठ, समाधि में लग जाता है।
जन्म-मरण का काट के चक्कर, अजर अमर पद पाता है॥

अभिमत

तार्थ-स्वरूप—

लेखक—आत्मनिधि मुनि 'त्रिलोक'

प्रकाशक—लाला ताराचन्द सूर्यकुमार जैन, होशियारपुर (पञ्जाब)

. मुनि श्री द्वारा पहले "गच्छाचार पइन्नयं" "हम सुशील कैसे बनें ?"
दे पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं—जो बहुत उपयोगी हैं। प्रस्तुत
तक भी अपने विषय को शास्त्राधार से स्पष्ट करने में पूर्ण समर्थ
है। 'गीतार्थ' शब्द का अर्थ, गीतार्थ अगीतार्थ का स्वरूप आदि
झने के लिये यह पुस्तक अवश्य देखनी चाहिये। मुनि श्री ने इस
र शास्त्रीय और चतुर्विध संघ के लिये उपयोगी साहित्य को प्रकाशित
समाज पर महान उपकार किया है। इस का लाभ समाज को
श्य लेना चाहिये। ५ नये पैसे भेज कर प्रकाशक से पुस्तक प्राप्त
सकेगी।

—"सम्यग्दर्शन" सैलाना
(C. P.)